कृति – I

कला ग्रेड 6 केर लेल

पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

0680

नाम: _____

अनुभाग: _____

स्कूल: _____

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0680 – कृति–I
कला ग्रेड 6 के लेल पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-951-1

पहिल संस्करण
जुलाई 2024 आषाढ़ 1946

PD 500T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद्, 2024

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी वाटरमार्कक सङ्ग 80 जीएसएम कागज़ पर छपल

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरबिन्दो मार्ग, नब दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग मे प्रकाशित आ एस.डी.आर. प्रिण्टर्स, ए-7, सेक्टर-बी-3, यू.पी.एस.आई.डी.सी, सिग्नेचर सिटी, लोनी, जिला-गाजियाबाद-201 102 (उ.प्र.) मे छपल अछि।

सभटा अधिकार रक्षित

- एहि प्रकाशनक कोनो भागकेँ प्रकाशकक पूर्व अनुमतिक बिना कोनो रूपमे वा कोनो माध्यमसँ इलेक्ट्रॉनिक, यान्त्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिङ्ग अथवा अन्यथा पुनर्निर्मित नहि कएल जा सकैत अछि, पुनर्प्राप्ति प्रणालीमे सङ्ग्रहित नहि कएल जा सकैत अछि अथवा प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।
- ई पोथी एहि शर्तक अधीन बेचल जाइत अछि जे एकरा व्यापारक माध्यमसँ प्रकाशकक सहमतिक बिना कोनो प्रकारक बाध्यकारी वा आवरणमे उधार नहि देल जायत, फेरसँ बेचल जायत, किराया पर नहि देल जाएत वा अन्यथा निपटान नहि कएल जाएत जाहिमे ई प्रकाशित कएल गेल अछि।
- एहि प्रकाशनक सही मूल्य एहि पृष्ठ पर छपल मूल्य अछि, रबर स्टाम्प वा स्टिकर या कोनो अन्य माध्यमसँ सङ्केत देल गेल कोनो संशोधित मूल्य गलत अछि आ अस्वीकार्य होयबाक चाही।

प्रकाशन प्रभागक कार्यालय, एन सी ई आर टी

एन.सी.ई.आर.टी परिसर
श्री अरबिन्दो मार्ग
नब दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड
होसदाकेरे हल्ली विस्तार बनशंकरी ईई स्टेज
बङ्गलुरु 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट बिल्डिङ्ग
पी.ओ.नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी डब्ल्यू सी कैम्पस
ऑप. धनकल बस स्टॉप, पनिहाटी
कलकता 700 114 **फोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी कॉम्प्लेक्स मालीगां
गुवाहाटी 781 021 **फोन: 0361-2674869**

प्रकाशन टीम

प्रमुख, प्रकाशन प्रभाग : *अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य सम्पादक (प्रभारी) : *बिजनन सुतार*
मुख्य व्यवसाय प्रबन्धक : *अमिताभ कुमार*
प्रोडक्शन ऑफिसर : *जहान लाल*

लेआउट: मनीष छतपर, मुम्बई
चित्रण आ आवरण: सन्तोष मिश्रा, ऐमार्ट्स, दिल्ली

© NCERT not to be republished

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी) 2020 मे एकटा एहन शिक्षा प्रणालीक परिकल्पना कएल गेल अछि जे भारतीय लोकाचार आ मानव प्रयास आ ज्ञानक सभ क्षेत्रमे एकर सभ्यतागत उपलब्धिमे निहित अछि, सङ्गहि सङ्ग छात्रसभकेँ एकैसम शताब्दीक सम्भावना आ चुनौतीसँ रचनात्मक रूपसँ जुड़बाक लेल तैयार करैत अछि। एहि आकांक्षी दृष्टिकोणक आधार स्कूल शिक्षा लेल राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा (एन.सी.एफ-एस.ई) 2023 द्वारा सभ चरणमे पाठ्यचर्या क्षेत्रमे नीक जकाँ निर्धारित कएल गेल अछि। मूलभूत आ प्रारम्भिक चरणमे छात्रसभक अन्तर्निहित क्षमता (मानव अस्तित्वक पाँचो विमान, पञ्चकोशकेँ स्पर्श करैत) केँ पोषित कयलाक बाद ई हुनक शिक्षाक प्रगतिक रास्ता प्रशस्त कएलक।

आगू मध्य चरणमे। एहि तरहेँ, मध्य चरण प्रारम्भिक आ माध्यमिक चरणक बीच एकटा सेतुक रूपमे काज करैत अछि, जे कक्षा छठम सँ कक्षा आठम धरि तीन साल धरि पसरल अछि।

मध्य चरणमे, एन.सी.एफ-एस.ई 2023क उद्देश्य छात्रसभकेँ ओहि कौशलसँ लैस केनाइ छैक जे ओकर क्षमता बढ़बाक लेल आवश्यक छैक, जेना-जेना ओ अपन जीवनमे आगू बढ़ैत छथि। ई हुनकर विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक आ कथात्मक क्षमताकेँ बढ़यबाक प्रयास करैत अछि, आ हुनका ओहि चुनौती आ अवसरक लेल तैयार करबाक प्रयास करैत अछि जे हुनकर प्रतीक्षा करैत अछि। एकटा विविध पाठ्यक्रम, जाहिमे नौ विषय सम्मिलित अछि, अर्थात् तीन भाषा - जाहिमे सँ कमसँ कम दूटा भाषा भारतक मूल भाषा, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, योग आ कल्याण, आ व्यावसायिक शिक्षा ओकर समग्र विकासकेँ बढ़ावा देत।

एहन परिवर्तनकारी सीखबाक संस्कृतिक लेल किछु आवश्यक शर्तक आवश्यकता होइत छैक। ओहिमेसँ एकटा अछि विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रमे उपयुक्त आ संवादात्मक पाठ्यपुस्तक होयब जे सामग्री आ शिक्षाशास्त्रक बीच मध्यस्थतामे केन्द्रीय भूमिका निभाओत- एकटा एहन भूमिका जे प्रत्यक्ष निर्देश आ अन्वेषण आ जाञ्चक अवसरक बीच विवेकपूर्ण सन्तुलन स्थापित करत। अन्य शर्तसभमे - कक्षा व्यवस्था, प्रौद्योगिकी एकीकरण आ शिक्षककक तैयारी पाठ्यचर्या क्षेत्रक भीतर आ बाहर दुनू तरहक वैचारिक सम्बन्ध स्थापित करबाक लेल महत्वपूर्ण अछि। राष्ट्रीय शैक्षिक

© NCERT not to be republished

अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी) अपन दिससँ छात्रसभकेँ एहन उच्च गुणवत्तावला पाठ्यपुस्तक प्रदान करबाक लेल प्रतिबद्ध अछि। एहि उद्देश्यक लेल गठित विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी), जाहिमे उल्लेखनीय विषय-विशेषज्ञ, शिक्षाविद, कलाकार आ अभ्यास करय बला शिक्षक शामिल छथि, एहन पाठ्यपुस्तककेँ विकसित करबाक लेल हर सम्भव प्रयास कएलनि अछि। कृति–1, कक्षा छठम लेल कलाक पाठ्यपुस्तक एहिमेसँ एक अछि।

कृति-1क सामग्रीमे दृश्य कला, नृत्य, रङ्गमञ्च आ सङ्गीतक कला रूप सम्मिलित अछि। ई पाठ्यपुस्तक शिक्षार्थीक लेल अपन रचनात्मकताक अन्वेषणक सङ्ग-सङ्ग अपनाकेँ व्यक्त आ अन्वेषण करबाक लेल अछि। कृति-I एकर सामग्री, दृश्य आ अन्य घटकसभ, समृद्ध भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतक कलात्मक आ सांस्कृतिक विरासत, मूल्य – सभटा भारतमे गहराई सँ निहित अछि। सभ लिङ्ग आ विशेष क्षमतावला छात्रक समावेशिता कलामे निहित अछि जे सभ छात्रकेँ समान अवसर दैत अछि। प्रौद्योगिकी एकीकरणक इष्टतम उपयोग करैत क्यूआर कोडकेँ अतिरिक्त सीखबाक संसाधनक रूपमे भरि एम्बेड कएल गेल अछि।

सभ व्यावहारिक उद्देश्यक लेल, कृति- 1 अपन पाठ्यचर्या लक्ष्यसभमे सफल रहल अछि - विषय आ सामग्रीक उचित चयनक माध्यमसँ छात्रसभक बीच प्राकृतिक जिज्ञासाकेँ बढ़ावा देब, आ हुनका सभमे एहि स्तरपर मूल दक्षताक विकास करब जेना एनसीएफ-एसई मे विभिन्न कला रूपक रचनात्मकता, अन्वेषण आ अनुभवक लेल परिकल्पित कयल गेल अछि। खंड आ अध्यायकेँ बुद्धिमानीसँ तैयार कयल गेल अछि जाहिसँ सभ छात्रकेँ विभिन्न गतिविधिमे समायोजित कयल जा सकय, जाहिसँ हुनक रचनात्मकता आ अभिव्यक्ति सामने आबि सकय। एतय सुझायल गेल प्रत्येक गतिविधि छात्रसभकेँ एहन बेसी सीखबाक संसाधनक खोज करबाक यात्रामे लऽ जायत, चाहे ओ हुनक प्राकृतिक परिवेश हो, दिन-प्रतिदिन के काज हो अथवा मानवीय हस्तक्षेप। एकर अतिरिक्त, अभिभावक आ शिक्षकक भूमिका सेहो छात्रसभकेँ मार्गदर्शन आ प्रोत्साहित करबामे अमूल्य होयत। एकरा सङ्ग हम ओहि सब लोकक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे एहि पाठ्यपुस्तकक विकासमे शामिल भेल छथि आ आशा करैत छी जे ई सभ हितधारकक अपेक्षाकेँ पूरा करत। सङ्गहि, हम आबयवला वर्षमे आ सुधारक लेल एकर सभ उपयोगकर्तासँ सुझाव आ प्रतिक्रिया सेहो आमंत्रित करैत छी

दिनेश प्रसाद सकलानी
निर्देशक
राष्ट्रीय शैक्षिक परिषद
अनुसन्धान आ प्रशिक्षण

जुलाई 2024
नब दिल्ली

© NCERT not to be republished

पोथीक सम्बन्धमे

कृति–I ओ पाठ्यपुस्तक अछि जे अहाँकेँ कलाक दुनियामे लऽ जायत, दृश्य आ प्रदर्शन कलाक विशाल, आ रोमाञ्चक ब्रह्माण्डक अन्वेषण आ खोज करत, जकर उद्देश्य रचनात्मकताकेँ प्रज्वलित करब, विभिन्न कला रूपक लेल प्रशंसा बढ़ाएब, आ छात्रसभक कलात्मक कौशलक विकास करब अछि। छठम कक्षाक लेल डिजाइन कएल गेल एहि पोथीमे विभिन्न तरहक कलात्मक विषय अछि, जाहिमे दृश्य कला, सङ्गीत, नृत्य आ रङ्गमञ्च सम्मिलित अछि।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी) 2020 के भावना आ कला शिक्षा लेल राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन (एन.सी.एफ-एस.ई) 2023मे निर्धारित पाठ्यचर्या लक्ष्य, दक्षता आ सीखबाक परिणामक आधार पर, कृति-1 विभिन्न कला रूपमे सृजनक लेल एकटा पुस्तक अछि। एहिमे अनेको आकर्षक गतिविधि आ प्रेरणादायक परियोजना अछि जे जीवन आ हमरासभक लगपासक दुनियामे कलाक भूमिकाकेँ बुझबामे आ सराहना करबामे सहायता करत। छात्र सभ प्रसिद्ध कलाकार आ हुनक रचनाक विषयमे सेहो सीखत, विभिन्न तकनीक आ शैलीक अन्वेषण करत, आ एतय धरि कि स्वयं रचना सेहो करत। प्रत्येक गतिविधि शिक्षार्थी के एकटा सुन्दर अनुभव देत!

एहि पोथीमे देल गेल गतिविधि आ जानकारीक अतिरिक्त, अङ्कीय (डिजिटल) रूपमे देल गेल एहन आ गतिविधि आ रचनात्मक विचार अछि, जकरा पाठ्यपुस्तकक आरम्भमे क्यूआर कोडकेँ स्कैन कऽ आ प्रत्येक अध्यायक सङ्ग-सङ्ग जतय आवश्यकता महसूस कयल गेल अछि ओतय पहुँचल जा सकैत अछि। कलाक सुन्दरता ई अछि जे ई विभिन्न रुचि आ रुचिक लोकसँ जुड़ि सकैत अछि। प्रत्येक गोटे कलासँ अपन अद्वितीय सम्बन्ध पाबि सकैत छथि। हमर देशमे विरासत, संस्कृति आ परम्पराक एकटा नमहर इतिहास रहल अछि जतय सभ कला रूपक अभ्यास कयल जाइत छल।

"कला मानव सौन्दर्य संवेदनशीलताक विषयमे अछि। सौन्दर्य संवेदनशीलता सौन्दर्यक अनुभव करबाक हमर क्षमताकेँ सन्दर्भित करैत अछि, नीक आ सुन्दरक सम्बन्धमे विचारित निर्णय पर पहुँचैत अछि, आ कला निर्माण प्रक्रियामे परिष्करणक भावनाक दिशामे प्रयास करैत अछि। कला सौंदर्य, आकार, समरूपता, प्रतिरूप आ गतिकेँ बुझबाक एकटा व्यक्तिगत रूप अछि जे भावनाकेँ जागृत करबाक लेल अभिव्यक्तिमे मिश्रित अछि। कलात्मक काज

© NCERT not to be republished

वैचारिक आ प्रक्रियात्मक दुनू ज्ञानकेँ सम्मिलित करैत अछि, आ मनुष्यक 'मूर्त' संवेदी आ भावनात्मक अनुभवसँ सम्बन्धित अछि।" (एनसीएफ-एसई, पृष्ठ 294)। एहि तरहेँ, एहि पोथीक निर्माणक पाछाँ मूल विचार ई सुनिश्चित करब रहल अछि जे शिक्षार्थी विभिन्न कला रूपक दुनियामे अन्वेषणक सम्पूर्ण प्रक्रियाक आनन्द लैत छथि। पाठ्यपुस्तक विकसित करैत काल ई तथ्य ध्यान मे राखल गेल अछि जे बच्चाक लेल किछु नव सीखब या प्रयास करब कतहु तनावपूर्ण नहि होबाक चाही। जेनाकि प्रत्येक शिक्षार्थी कला रूपसँ अपन सम्बन्ध अपन-अपन तरीकासँ पबैत अछि, ई फलदायी होयत जों शिक्षक सेहो सूचनाकेँ सम्प्रेषित करबाक बदला शिक्षार्थीक कलाक एहि यात्रामे सहायता करबाक लेल गतिविधिसभमे सक्रिय रूपसँ भाग लैत छथि।

कृति–1 मे चारिटा खण्ड अछि, जकरा सम्पूर्ण पुस्तकमे विशिष्ट रङ्ग द्वारा प्रदर्शित कयल गेल अछि;

पीयर दृश्य कलाक लेल

नील सङ्गीत लेल

गुलाबी नृत्क लेल आ आन्दोलनक लेल

बैगनी रङ्ग मञ्चक लेल

उपरोक्त प्रत्येक खण्ड एकटा सुखद अनुभव उत्पन्न करबाक लेल विशिष्ट रूपसँ तैयार कएल गेल अछि। 'दृश्य कला' खण्ड छात्रसभकेँ अपन विचार, आ भावनाकेँ अपन चारूकातक रोजमर्रा के अनुभव आ टिप्पणीक दृश्य आ व्यक्त करबामे सशक्त बनयबाक लेल तैयार कएल गेल अछि। एहि इकाईक गतिविधिसभ हुनका द्वि-आयामी आ त्रि-आयामी तकनीकक आधारभूत कौशलसँ परिचित कराबैत अछि आ दृश्य कलामे विभिन्न मीडिया आ सामग्रीक अन्वेषण करैत अछि। सभ अध्यायसभमे, छात्रसभकेँ अनेक सामग्री, सतह आ तकनीकसँ परिचित करायल जाइत अछि जकर उपयोग पछिला सैकड़ो वर्षमे कएल गेल अछि, जखनकि, बहुत रास अवसर अछि जतय हुनका स्वयं अन्वेषण आ खोज करबाक

© NCERT not to be republished

एहि पाठ्यपुस्तकमे 'सङ्गीत'क खण्डमे ज्ञानक अन्वेषण करबाक गुण अछि, जाहिसँ छात्रलोकनिकेँ खोजक एहि यात्राक क्रममे कतेको अवधारणाक अनुभव करबाक अवसर भेटैत अछि। यद्यपि किछु तत्व परिचित आ सान्त्वनादायक अनुभव कऽ सकैत अछि, मुदा किछु विचार पूर्णतः नब भऽ सकैत अछि।

एहि पाठ्यपुस्तकक उद्देश्य सभकेँ विभिन्न तरहक सङ्गीतक खजानासँ मोहित करबाक अछि जे हमर देशक क्षेत्रसभमे पसरल अछि, जतय लोक द्वारा अनेक कला रूपक अभ्यास कयल जा रहल अछि। सङ्गीत हमर जीवन मे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। सङ्गीत साल भरि सभ उत्सवक हिस्सा होइत अछि, चाहे ओ राष्ट्रीय पाबनि हो, सामाजिक समारोह, धार्मिक उत्सव वा गाओल गेल गीत हो, आ कोनो समारोह, फसल वा कोनो आन मौसममे नृत्यक लेल बजाओल जायवला वाद्ययन्त्र हो। सङ्गीत दैनिक जीवनमे सभकेँ अपन विश्वास, प्रथा, अनुष्ठान आदि सँ जोड़ैत अछि।

सभकेँ गीत गायब आ सङ्गीतपर नाचब नीक लगैत अछि। एहि पाठ्यपुस्तकक अतिरिक्त, सङ्गीत सीखबाक एहि प्रयासमे, बाबा -मैंया , माय -बाबु , आ समुदायक सदस्य अद्भुत संसाधन छथि - सङ्गीतक अनुभवकेँ बढ़यबाक लेल जे एकरा बेसी जीवन्त आ गतिशील बनबैत अछि। सङ्गीतक गीत आ लय, वाद्ययन्त्रक ध्वनि, शारीरिक गति, गीतक सङ्ग हाव-भाव, बजाओल गेल सङ्गीत पर नृत्यक चरण, सकल आ सूक्ष्म मोटर गतिकेँ बढ़ाओत। सङ्गीतक आनन्द छात्रसभकेँ तनावमुक्त वातावरण दिस लऽ जायत। सङ्गीतक आत्मामे लोरी सुनब, मैंयाक गुनगुनाहट, खेतमे किसानक गीत, चिड़ै-मधुमाछीक गुलजार वा खिड़कीपर बरखाक थपथपाएब सम्मिलित अछि। आउ हम सब मिलि कऽ अन्वेषणक एहि यात्राक आरम्भ करब जाहिसँ सङ्गीतमे देश भरिमे बिखरल गहनाकेँ ताकल जा सकय।

'नृत्य'क इकाईकेँ शिक्षार्थीकेँ भारतक नृत्यकेर विभिन्न रूपक झलक देबाक लेल प्रारूप बनाओल गेल अछि। भारतक लोक नृत्य रूपक ज्ञानकेँ आगू बढ़बैत ई खण्ड छात्रसभकेँ छऊ आ यक्षगान सन पारम्परिक रूपसँ परिचित कराओत। ई खण्ड धीरे-धीरे हुनका शास्त्रीय नृत्यक मूल बातकेँ आजमाबय आ किछु तकनीकी शब्दसँ परिचित होयबाक लेल प्रेरित करैत अछि। अध्यायसभमे नवरसक सङ्ग प्रदर्शनमे भावनात्मक सामग्रीक परिचय सेहो देल गेल अछि, जखन कि बच्चासभकेँ अपन भावनासँ सहज होयबाक आ ओकरा व्यक्त करबाक अनुमति देल गेल अछि। हाथक हाव-भाव सेहो साङ्केतिक भाषाक भण्डार होयबाक विचारक सङ्ग प्रस्तुत कएल जाइत अछि।

© NCERT not to be republished

लेल छोड़ल जाइत अछि।

पहिल तीन अध्याय विभिन्न तरहक चित्र अभ्यासक माध्यमसँ प्रत्येक छात्रक निरीक्षणकेँ तेज करबाकेँ महत्व दैत अछि। आकर्षक गतिविधिक माध्यमसँ - प्राकृतिक रङ्ग बनेबाक तकनीक, रङ्ग मिश्रण, आ टिण्ट आ रङ्गक निर्माणक तकनीक प्रस्तुत कएल जाइत अछि। अपन मोहर, चित्र, कागजी शिल्प आ फ्लिप बुक बनएबामे शामिल प्रक्रियासभ प्रत्येक छात्रक लेल बहुत रास नब जिज्ञासा आ अनुभवकेँ जन्म देत।

एहि इकाईमे भारतीय कलाकार आ कला परम्पराक प्रारम्भिक झलक सेहो सम्मिलित अछि, जकरा पुस्तकमे उल्लिखित उदाहरणसँ आगू बढ़ाओल जयबाक चाही। छात्रसभकेँ अपन क्षेत्र वा राज्यमे भेटयबला विभिन्न कला प्रथा परम्परा आ कलाकारक विषयमे अन्वेषण, उत्सव आ अध्ययन करबाक चाही। एहि तरहक प्रदर्शनसँ प्राप्त ज्ञान हुनक सौन्दर्य संवेदनशीलता, रचनात्मक कल्पना आ हुनक आलोचनात्मक सोच कौशलकेँ ओ सभ काजमे बढ़ाओत।

एकर अतिरिक्त, vii ,viii ,इकाई एहन विशेषताक सङ्ग नृत्य रूपकेँ चित्रित कऽ नृत्यक लैङ्गिक तटस्थता पर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। एहिमे पाठयक्रमक बाहरक पहलूकेँ सम्मिलित कएल गेल अछि आ छात्रकेँ स्वयं बेसी जानकारी तकबाक लेल प्रोत्साहित कयल गेल अछि।

'रङ्गमञ्च' खण्डक संरचना नाट्य विषयक विस्तृत श्रृंखलाकेँ समेटबाक लेल कएल गेल अछि। प्रत्येक अध्यायक उद्देश्य रचनात्मक कौशलक विकास करब, कलात्मक अभिव्यक्तिकेँ बढ़ाएब आ कलाक प्रति प्रशंसाकेँ ग्रहण करब अछि। भावनाकेँ बुझब आ व्यक्त केनाइ मात्र कला रूपक लेल आधारभूत नहि अछि अपितु शिक्षार्थीमे सही भावनात्मक सन्तुलनक निर्माणमे सेहो महत्वपूर्ण अछि। अध्यायमे व्यावहारिक गतिविधि आधारित प्रक्रियामे श्रृङ्गार, वेशभूषा प्रारूप , मञ्च, पटकथा लेखन आ कठपुतलीक तकनीकी तत्वक सेहो परिचय देल गेल अछि, जे प्रत्येक बच्चाकेँ अपन क्षमताक अन्वेषण करबामे सक्षम बनाओत आ रुचिक एकटा एहन क्षेत्र तकबा में मदति करत जाहिमे ओ उत्कृष्टता प्राप्त कऽ सकैत छथि। भारतक पारम्परिक सिनेमाघर पर एकटा अध्याय निश्चित रूपसँ बच्चासभकेँ ओहि तरहेँ मोहित करत, जेना ई पछिला किछु दशकमे काज कएलक।

'रङ्गमञ्च' खंडकेँ रङ्गमञ्चक लेल एकटा सुव्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करबाक लेल रूप रेखा तैयार कएल गेल अछि, जाहिसँ छात्रसभकेँ नीक जकाँ अन्वेषण, सृजन आ अभिव्यक्ति करबाक लेल प्रोत्साहित कयल गेल अछि। आकर्षक पाठ आ हाथसँ चलयवला गतिविधिक माध्यमसँ ओ लोकनि निश्चित रूपसँ बहुमूल्य कौशल प्राप्त करत आ रङ्गमञ्चक विविध दुनियाक लेल गहींर प्रशंसा प्राप्त करत।

© NCERT not to be republished

कृति-1क अन्तिम अध्याय सभ कला रूपक एकीकरण पर अछि जाहिमे सुझायल गेल गतिविधिक विषय पञ्चतत्व अछि जाहिसँ छात्रसभकेँ कला रूपक भीतर अन्तर-विषयक दृष्टिकोणक अनुभव भेटय। पुस्तकक अन्तमे, मूल्याङ्कन पर अनुभाग सभ कला रूपक मूल्याङ्कन दर्ज करबाक लेल एकटा खाका के सङ्ग-सङ्ग एकटा सामान्य प्रदान शीर्षक करैत अछि जकर उपयोग रिपोर्टिंगक लेल कयल जा सकैत अछि।

कला वर्गक संरचना

ई आदर्श होयत यदि कक्षा कोनो बाधासँ मुक्त होयत जाहिसँ बच्चा नृत्य, रङ्गमञ्च लेल स्वतंत्र रूपसँ घूमि सकैत अछि अथवा ओहि तरहेँ बैसि सकैत अछि जेना ओ एकटा चित्र बनबय चाहैत अछि जकर ओ कल्पना कयने छथि। भौतिक परिवेशमे 'मुक्तता आ खुलापन'क ई तत्व अवचेतन रूपसँ 'सोचमे मुक्तता आ खुलापन'क अनुवाद करैत अछि। कला कक्ष सुसज्जित आ जानकारीपूर्ण प्रदर्शन सामग्रीसँ समृद्ध होयबाक चाही। शिक्षक आ शिक्षार्थीक सङ्ग-सङ्ग सहकर्मीक बीच सेहो बहुत अन्तरक्रिया होयबाक चाही।

वर्ग समय सारणी

शैक्षणिक वर्षक माध्यमसँ चारू कला रूपकेँ एक सङ्ग सीखबाक सन्तुलित प्रगतिकेँ कायम रखबाक लेल, कलाक लेल प्रति सप्ताह पाँच अवधिक आवण्टन कएल जा सकैत अछि। ई या तँ 40 मिनटक अलग-अलग अवधि भऽ सकैत अछि अथवा दूटा 40 मिनटक अवधिक खण्ड अवधि भऽ सकैत अछि।

ज्योत्सना तिवारी
सदस्य-संयोजक, सीएजी कला,
अकादमिक समन्वयक, प्रोफेसर आ प्रमुख,
कला आ सौन्दर्यशास्त्र , शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. एम.सी. पन्त, कुलाधिपति, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना आ प्रशासन संस्थान (एन.आई.ई.पी.ए) (अध्यक्ष)
2. मञ्जुल भार्गव, प्रोफेसर, प्रिंसटन विश्वविद्यालय (सह-अध्यक्ष)
3. सुधा मूर्ति, प्रशंसित लेखक आ शिक्षाविद्
4. बिबेक देबरॉय, अध्यक्ष, आर्थिक सलाहकार परिषद – प्रधानमन्त्री (ईएसी – पीएम)
5. शेखर माण्डे, पूर्व डीजी, सी.एस.आई.आर, विशिष्ट प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोराई, प्रोफेसर, ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शङ्कर महादेवन, सङ्गीत मास्त्रो, मुम्बई
8. यू. विमल कुमार, निदेशक, प्रकाश पादुकोण बैडमिण्टन अकादमी, बैङ्गलोर
9. मिशेल डेनिनो, विजिटिङ्ग प्रोफेसर, आई.आई.टी – गाँधीनगर
10. सुरीना राजन, आईएएस (सेवानिवृत्त), हरियाणा, पूर्व डीजी, एचपीए
11. चामू कृष्ण शास्त्री, अध्यक्ष, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मन्त्रालय
12. सञ्जीव सान्याल, सदस्य, आर्थिक सलाहकार परिषद- प्रधानमन्त्री (ईएसी – पीएम)
13. एम. डी. श्रीनिवास, अध्यक्ष, सेण्टर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लन्धे, प्रमुख, एन.एस.टी.सी कार्यक्रमक कार्यालय
15. रॉबिन छेत्री, निदेशक, स्कर्ट, सिक्किम
16. प्रत्यूषा कुमार मण्डल, प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान मे शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

17. दिनेश कुमार, प्रोफेसर आ प्रमुख, योजना आ निगरानी प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

18. कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

19. रञ्जना अरोड़ा, प्रोफेसर आ प्रमुख, पाठ्यक्रम अध्ययन आ विकास विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नब दिल्ली

(सदस्य-सचिव)

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक विकास समूह

अध्यक्ष

शङ्कर महादेवन, सङ्गीत उस्ताद, मुम्बई

योगदानकर्ता

आराधना गुप्ता, कलाकार आ मार्गदर्शक - राष्ट्रीय परामर्श मिशन, एन.सी.टी.ई, भारत सरकार

बिदिशा हाजरा, सहायक प्रोफेसर, सङ्गीत, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

बिन्दु सुब्रमण्यम, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिङ्ग आर्ट्स (एसएपीए), बेङ्गलुरुक सह-संस्थापक आ सीईओ।

चिण्टू साची, सङ्गीत शिक्षक, सुनाद, बेङ्गलुरु

दीपा श्रीधर, निदेशक, शङ्कर महादेवन अकादमी

मधुसूदनन, पीवी, सहायक प्रोफेसर, कला शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

मालविका राजनारायण, दृश्य कलाकार आ शिक्षक, विजिटिङ्ग फैकल्टी, अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रियदर्शिनी घोष, कलात्मक निदेशक, प्रियदर्शिनी कला, कोलकाता राजश्री एसआर, सदस्य, एन.एस.टी.सी कार्यक्रम कार्यालय

शर्बरी बनर्जी, सहायक प्रोफेसर, कला आ सौन्दर्यशास्त्र मे शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली

सिद्धि गुप्ता, सङ्काय, सृष्टि मणिपाल कला, डिजाइन आ प्रौद्योगिकी संस्थान, बेङ्गलुरु

श्रीधर रङ्गनाथन, संस्थापक आ सीईओ, शङ्कर महादेवन अकादमी, बेङ्गलुरु

सुधन्वा ए के, सहायक प्रोफेसर, रेवा विश्वविद्यालय, बेङ्गलुरु

विदुषी ज्योति भट, भरतनाट्यम प्रशिक्षक, पूर्णपर्मति, बेङ्गलुरु

© NCERT not to be republished

समीक्षक

अनुराग बेहर, सदस्य, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा निरीक्षण समिति

अनुतोष देब, टीजीटी, कला (सेवानिवृत्त), केन्द्रीय विद्यालय, गुवाहाटी

गोविन्दाजू भारद्वाज, निदेशक, प्रदर्शन आ दृश्य कला विद्यालय, इग्नू, नब दिल्ली

मञ्जुल भार्गव, प्रोफेसर आ सह-अध्यक्ष, एन.एस.टी.सी।

रिम्सी खन्ना, सहायक प्रोफेसर, कला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नब दिल्ली

सदस्य समन्वयक

ज्योत्सना तिवारी, प्रोफेसर आ प्रमुख, कला आ सौन्दर्यशास्त्र शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी, नब दिल्ली

© NCERT not to be republished

अभिस्वीकृति

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान आ प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी) एहि पाठ्यपुस्तकक विकासमे क पारम्परिक रूप से अलग विषय पर अपन दिशानिर्देशक लेल राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा निरीक्षण समितिक सम्मानित अध्यक्ष आ सदस्य, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी)क अध्यक्ष आ सदस्य: कला आ अन्य सम्बन्धित सी.ए.जीक मार्गदर्शन आ समर्थनकेँ स्वीकार करैत अछि।

एन.सी.ई.आर.टीक वरिष्ठ सङ्काय सदस्य- सुनीति सनवाल, प्रोफेसर आ प्रमुख, प्रारम्भिक शिक्षा विभागक समर्थनकेँ स्वीकार करैत अछि; इन्द्राणी भादुड़ी, प्रोफेसर आ प्रमुख, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग; विनय सिंह, प्रोफेसर आ प्रमुख, विशेष आवश्यकतावला समूहक शिक्षा विभाग; आ मिल्ली रॉय, प्रोफेसर आ प्रमुख, लिङ्ग अध्ययन विभाग, एहि पाठ्यपुस्तकमे लिङ्गक एकीकरण, समावेशन, मूल्याङ्कन आदि जेहन क्रॉस-कटिङ्ग विषयक समीक्षा करबाक लेल।

हम निम्नलिखित व्यक्ति आ संस्थानक प्रति आभारी छी जे हमरा अपन संसाधनक उपयोग लिखित सामग्री, चित्र, फोटो आ ऑडियो-वीडियो सामग्रीक रूपमे करबाक अनुमति देलनि - सङ्गीत नाटक अकादेमी; कला उत्सव अभिलेखागार, एन.सी.ई.आर.टी; सांस्कृतिक संसाधन आ प्रशिक्षण केन्द्र। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद।

बेङ्गलुरुक संस्थान — व्योमा आर्टस्पेस आ स्टूडियो थिएटर, अभिनय तरङ्गा नाटक शाला , सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिङ्ग आर्ट्स (एस.ए.पी.ए), शङ्कर महादेवन सङ्गीत अकादमी; सुनाद; सुरभि थिएटर, हैदराबाद; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली। राष्ट्रीय शिल्प सङ्ग्रहालय आ हस्तकला अकादमी। अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन; चिल्ड्रेन लिटिल थिएटर, कोलकाता; एक तारा; मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (द क्रॉसबी ब्राउन कलेक्शन ऑफ म्यूजिकल इंस्ट्रूमेण्ट्स), न्यूयॉर्क; दिल्ली स्ट्रीट आर्ट द्वारा भारतमे यूरोपीय सङ्घक प्रतिनिधिमण्डलक 'बैक टू स्कूल' परियोजना 2023-24; भारतीय सङ्गीत अनुभव, बेङ्गलुरु; श्रीधर रङ्गनाथन, सीईओ आ सह-संस्थापक, शङ्कर महादेवन अकादमी; वाणी हेम्मिगे; सापा सँ अनुषा चेलप्पा आ क्षितिज कश्यप; आलोक कानूनगो; अर्पिता वेङ्कटेश; सञ्जना घोष; देबाञ्जलि बन्दोपाध्याय; अनुपमा होस्केरे (पद्मश्री पुरस्कारसँ सम्मानित); धातु कठपुतली रङ्गमञ्च, बेङ्गलुरु; आ शठवधानी आर. गणेश (प्रसिद्ध विद्वान)।

© NCERT not to be republished

एन.सी.ई.आर.टी ,अम्बी सुब्रमण्यम, वायलिन एक्सपोनेण्ट, सङ्गीतकार, शिक्षक आ सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिङ्ग आर्ट्सक सह-संस्थापकक प्रयासक सराहना करैत अछि। जयन्ती कुमारेश, वीणा एक्सपोनेण्ट, शोधकर्ता आ शिक्षक; विदुषी तारा किनी, सलाहकार शङ्कर महादेवन अकादमी, पाठ्यक्रम विकास, सङ्गीत शिक्षा आ भारतीय धरोहरक सञ्चारमे विशेषज्ञ; शिवाङ्गी पुरोहित, नृत्य शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 2, आर. के. पुरम, नई दिल्ली। हम प्रधानाध्यापक, मॉडर्न स्कूल, बाराखम्भा रोड, नब दिल्ली के आभारी छी जे छात्रक रचना आ काज करैवला छात्रक फोटो के उपयोग के अनुमति देलनि।

परिषद एहि पाठ्यपुस्तकक सम्पादनक लेल एन.सी.ई.आर.टीक प्रकाशन प्रभागक सम्पादक (सम्विदात्मक) इल्मा नासिरक प्रयासकेँ स्वीकार करैत अछि। डीटीपी प्रकोष्ठक प्रभारी पवन कुमार बैरियार आ डीटीपी ऑपरेटर (अनुबन्ध), प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टीक पूनम केर प्रयास आ कठिन परिश्रमक सराहना एहि दस्तावेजकेँ अन्तिम रूप देबाक लेल कएल जाइत अछि। परिषद सम्पादकीय सहायक (अनुबन्धात्मक) आस्था शर्माक प्रति आभार व्यक्त करैत अछि। एल गुइट, सोमिवोन ए. शिशक आ अदिबा तसनीम, प्रूफ रीडर्स (अनुबन्धात्मक), प्रकाशन प्रभाग, एनसीईआरटी।

© NCERT not to be republished

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

© NCERT not to be republished

प्रिय विधार्थी

अहाँ छठम कक्षाक लेल कलाक पाठ्यपुस्तक 'कृति–1' राखि रहल छी, जे आनन्द आ गतिविधिसँ भरल अछि। कृति-I या सृजनक लेल एकटा आग्रह अहाँ सबके भीतर अछि आ अहाँ अपन प्रारम्भिक जीवनक वर्षमे रचनात्मक रहल छी, आब अहाँ अपन स्कूली शिक्षाक एकटा आउर चरणमे प्रवेश कऽ रहल छी जतय अन्वेषण आ प्रयोग करबाक लेल बहुत किछु अछि। ई पुस्तक अहाँकेँ अपन परिवेश, पर्यावरण, लोक आ समाजक प्रति बेसी सम्वेदनशील बनाओत।

जेना कि अहाँ पछिला कक्षामे अनुभव कएने छी, कतेको कला रूप अछि आ अहाँकेँ हरदम बनएबामे मजा आबि रहल अछि - करब वा देखब वा सुनब वा नाचब, वाद्ययन्त्र बजाएब, लिखब, चित्रकला, माटि चित्रकला, कागजसँ मॉडल बनाएब आ निश्चित रूपसँ गायन, नकल, नाटक, एनीमेशन आदि। अहाँ हुनका सभसँ अपन दैनिक जीवनमे, स्कूल मे, घरमे वा यात्राक क्रममे प्रेम करैत छी। अहाँ अपन चारू कात कतेको चीजक अवलोकन करैत छी जे अहाँकेँ सोचए लेल मजबूर करैत अछि - लोक कोना काज करैत अछि, अलग-अलग मौसममे प्रकृतिक सङ्ग होबयवला परिवर्तन, जानवर आवाज करैत अछि, चिड़ै उड़ैत अछि, पात सरसराइत अछि, फूलक कतेको रङ्ग आ बनावट होइत अछि, मधुमाछी गुलजार करैत अछि, रङ्गीन तितली फुलबाड़ी मे घूमैत अछि, अहाँक घरमे दैनिक काज कयल जाइत अछि, ट्रेन चलैत अछि , हवाई जहाज उड़ैत अछि आ .....। ई सभ आकर्षक घटना अछि जे हमरासभकेँ अपन निर्माण आ अभिव्यक्ति करबाक लेल प्रेरित करैत अछि। ओ हमरा आश्चर्यचकित करैत अछि - केना, कियैक, कखन आ की!

भारतक भूमि हजारो सालक मानव सभ्यता आ विकासक साक्षी रहल अछि। कला हमरासभक चारू कात अछि आ आनन्द दैत अछि, चाहे हम सृजन कऽ रहल छी वा अनुभव कऽ रहल छी आ सङ्गहि जीवनकेँ सुन्दर बनबैत अछि। अहाँक सबहक भीतर एकटा कलाकार अछि, जे बाहर आबि किछु बनेबाक लेल उत्सुक अछि। रचनात्मक होबाक लेल, कलाकृति बनेबाक लेल, गति करबाक लेल, अहाँकेँ नीक पर्यवेक्षक बनबाक चाही, नीक कल्पना आ दृश्यीकरण होबाक चाही।

कृति–हमरा लग आनन्द आ आनन्दसँ भरल चारिटा कला रूप अछि जकर माध्यमसँ अहाँ एहि कला रूपसभक अन्वेषण करब आ सीखब - अपन मित्र, शिक्षक आ परिवारक सङ्ग प्रतिदिन किछु नब बनाउ।

© NCERT not to be republished

कला केर वर्ग शुरू करबासँ पहिने प्रार्थना

सामान्यतः कलाकार अपन प्रस्तुति शुरू करबासँ पहिने एकर पाठ करैत छथि। प्रत्येक कला वर्ग शुरू करबासँ पहिने अहाँ सेहो एकरा जोरसँ पढ़ि सकैत छी —

अंगिकां भुवनं यस्य,
वाचिकं सर्व वाङ्मयम्।
आहर्यं चन्द्र तारादि
तां वन्दे सात्विकं शिवम्
अङ्गिकम् भुवनम् यस्य,
वाचिकम् सर्ववाङ्मयम्।
आरुयम् चन्द्र तरादि
थम वन्दे सात्त्विकम शिवम्।

अर्थ

जतय भौतिक शरीर ब्रह्माण्ड अछि,
वाणी वा गीत सभ ध्वनिक सार अछि,
अलङ्करण चन्द्रमा आ तरेगन अछि।
हम ओहि परम दिव्यता के प्रणाम करैत छी।

ई अहाँ जे चारि कला रूप सीखि रहल छी ओकरा एक सङ्ग अनैत अछि –
अङ्गिका: गति, क्रिया आ अभिव्यक्तिक सङ्ग शारीरिक प्रदर्शन।
वाचिका : वाणी, सम्वाद, गीत आ गीत।
आहार: वेशभूषा, आभूषण, मूर्तिकला आ चित्रकला।
सात्विका : कलाकार आ दर्शकक लेल सबसँ गँहीर भावनात्मक आध्यात्मिक अनुभव।

ई लगभग एक हजार वर्ष पहिने नयन दर्पणमे नन्दिकेश्वर द्वारा संस्कृतमे लिखल श्लोकक उदाहरण अछि। अहाँ क्यूआर कोडकेँ स्कैन कऽ वीडियोकेँ सेहो देखि सकैत छी।

© NCERT not to be republished

विषय-वस्तु

अग्रशब्द ..... *iii*

पुस्तक क' सम्बन्धमे ..... *v*

प्रिय छात्र ..... *xvii*

दृश्य कला

1. वस्तु आ स्थिर जीवन 3

2. विशिष्ट चित्र कैँ बदलनाइ 10

3. लोक कैँ चित्रित कएनाइ 20

4. कागजक शिल्प 25

5. छपाइ कैँ सील केनाइ 29

सङ्गीत

6. सङ्गीत आ अहाँक भावना 36

7. सङ्गीत वाद्ययन्त्र 47

8. भारतीय सङ्गीतमे ताल वा तालम आ राग वा रागम 53

9. विविधताक धुन 61

10. गीत लेखन 70

11. सङ्गीत आ समाज 74

© NCERT not to be republished

नृत्य (नाच)

12. हमर देहमे सामञ्जस्य 79
13. नृत्यक साथ बाधासभकेँ तोडनाइ 91
14. गतिमे सामञ्जस्य 97
15. हमर सभक भूमिक नृत्य 104

थीयेटर

16. भावनाक अनावरण! 114
17. डिजाइन करू 127
18. रङ्गमञ्च के साथ 141
19. छाया आ तारक कथा — कठपुतली 145
20. ग्रैण्ड फिनाले 154
21. सभटा कला रूपक एकीकरण 157
22. आकलन 161

© NCERT not to be republished